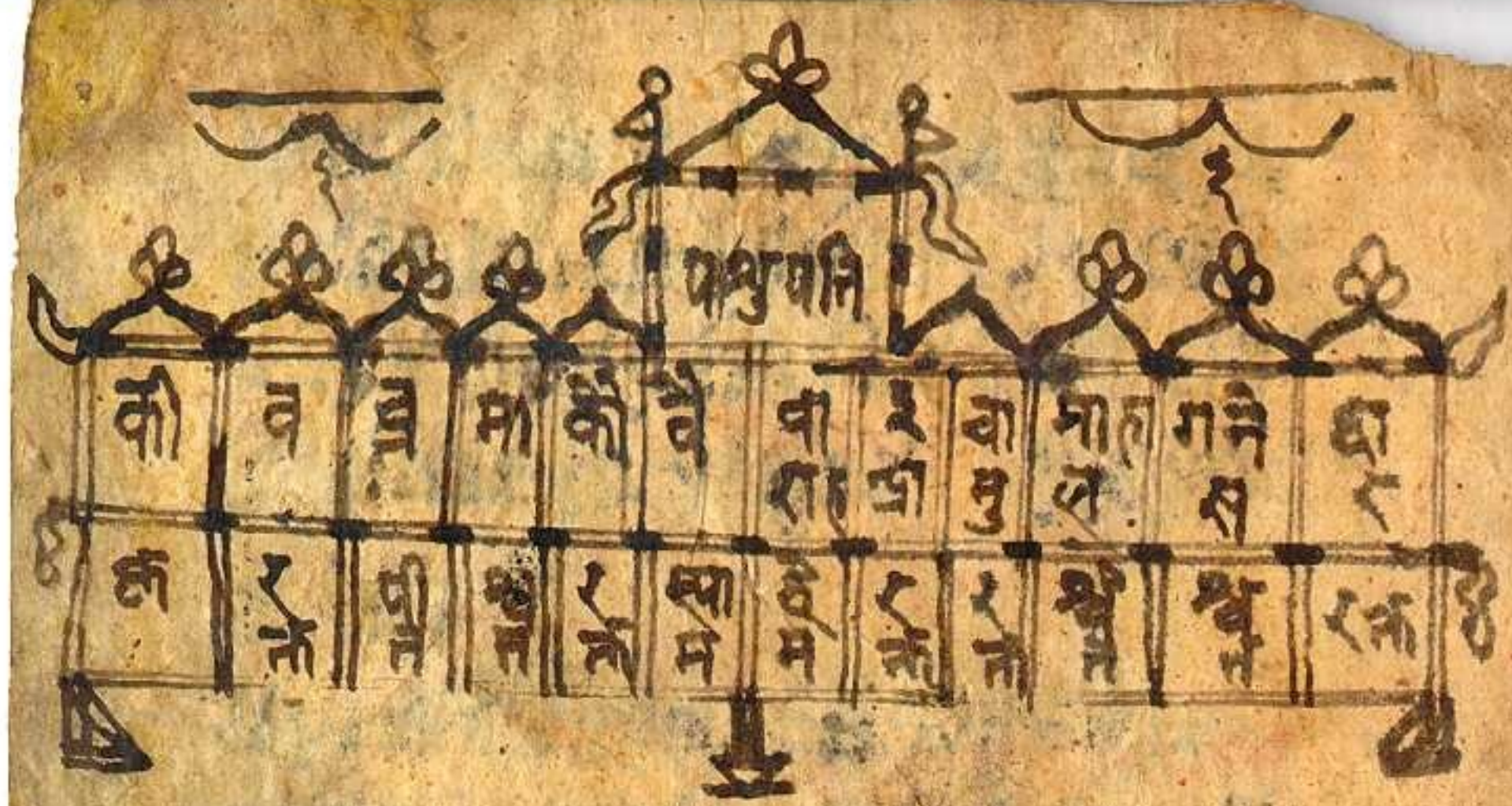


२०८ अक्षररत्न देगुली

पुष्पावलि

(पञ्चपति पूजा)

ASHA ARCHIVES ३४९०



ॐ नमः पशुपतये नमः ॥ सर्वसामग्रीसंज्ञी
कृ॥ यजमानेनावम्प ॥ ॥ सर्वार्थोपायक ॥
स्नानं पंचामृतैः ॥ ॐ दुग्धं दधि घृतं गन्धं स
र्वैरामधु संयुतं ॥ स्नापयेद्विधिना देवं इन्द्रशि
वपुराप्रये ॥ ॥ सुरस्नानं ॥ ॐ मद्देहपाप
मलिनं क्षालितं येन कर्मना ॥ तस्यात्मा
नं करिष्यामि शुद्धं तज्जलेन च ॥ श्रीस्व

न्यः चतुस्रसिंदूरं ॥ ॐ अष्टगन्धसुसंधादि
नयथाशक्त्यानुलेपनं ॥ गृहारादेवदेवेष्टा
शिन्दूरसहितोत्तमं ॥ ॐ अक्षतमधुमे
जजमकादृष्टि ॥ ॐ अक्षतंकुण्डुकी
अउपवीतसुदृष्टिकं ॥ प्रदौक्याम्यहंतु
भंगृहाराजदीश्वर ॥ ॥ कर्णपताः पंचप
ताः ॥ अदुवालाः वीः नैः ॥ ॥ ॥

ॐ कर्णमृषयुगले पंचवराधिजातमं ॥ व
स्त्रचिन्तामनियुतं श्रीदन्तवलिगृहतां ॥ ॥
त्वाकस्वानः मालास्वानः ॥ ॐ नातापुष्पसुगन्धा
दीनमालाग्रिठतानिच ॥ मयानिवेदिनीवेदि
तंतुभंगृहारापरमेश्वर ॥ ॥ चेलपत्रधतुर
ॐ शिवप्रतिकरं पुष्पंधतुरं नागवेलपत्रकं
॥ मयानिवेदितंतुभंगृहासाजगदीश्वर ॥ वाक्प

॥ **धूप** ॥ ॐ अगुरुगुर्गुमासीकर्पूरमृताभयः ॥
धूपवासश्च देवानां धूपो यं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥
दीप ॥ ॐ सुप्रकासमहादीपः सर्वत्रमिति रोप-
ताः ॥ सर्वाद्याभ्यन्तरं ज्योतिः दीपो यं प्रतिगृह्यतां ॥
पुष्प ॥ ॐ पुष्पं नमो महारसे दि-
व्यं पद्मिरसैर्ममैव तैर्नैवेद्यं देवदेवैश्चीरगृहान-
त्वेन मोनमः ॥ ॥ **फल** ॥ ॐ जां विरं पन संमि

धुनारंगवीरपूरकं ॥ मृत्नासकदलीलदुंदुदादिमं प्र-
तिगृह्यतां ॥ ॥ **मुखवास** ॥ ॐ मुखवासः सुचा-
मार्थं एलाजातीलवंगकं ॥ पूगकर्पूरसंयुक्तं
तां मूलं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ **दीक्षितजुसाः न्यासः**
त्रियाञ्जलितये ॥ अदिक्षितजुलसामुम्बालन
॥ **प्रतिष्ठा** ॥ ॐ यावद्धि महिमो यावद्वापुः
विग्रः ॥ तावत्पुत्रकरवादीन् वृद्धान् तान्वत्पुसा

दत्तः॥ ॥जघ॥महाललोत्र॥ॐ ज्योतिरूपाय
रूपाय ज्योति सांपतये नमो॥ तेजस्वं मात्मना
जाय इश्वराय नमो नमः॥ अथ वक्ताय वलिङ्गा
य भक्तानां भक्तलिङ्गिकेरा॥ वक्ता वक्तृस्वरू
पाय सर्वेश्वराय नमो रक्तो॥ अथाय समनाथा
य अन्नस्थाय नमो नमः॥ अन्ते स्वराय चान्तर
स्थाय जनाय नमो नमः॥ ॐ वक्त्रं भ्रूस्मश्रुके

र्क्षं शिखरं शिवगिरेरग्निदावाग्निमालं नेत्रे पिङ्गो
गतारे स्त्रिभिरपि च युते चिद्रतः कालमेधः॥ ॥
दंष्ट्रा चेत्थं प्रशिः प्रकृति तसु ह तार पाता व मूले श
शो वक्त्रं सुवक्त्रं त्रिदशगनपते हं त्वघं दक्षिणां
वः॥ वन्दे देवमिति॥ क्षमास्तुति॥ दक्षिणा॥ ॥
इति पशुपतिपूजा॥ ॥ ततो किर्तिमुरवादि
मातृका सर्वपूर्ववत्क्रमेण यजमानेन पूजये

तु॥३॥ ॥ ॥ ततो यजमानेन पुष्पमाजने
हन्ता वाक्मना यस्य मर्पये ॥ ॥ अथ वाहनेना
वस्य ॥ अथादि ॥ वाक्य ॥ ॐ असुकगोत्र असुक
दासस्य सर्वजनपरिवारस्य यथासास्त्रोक्तफ
लप्राप्तिकामनार्थं प्रतिवार्षिकयथाशक्त्युप
ारे पुनैवेकर्तुं ॥ ॥ पुष्पं वा ॥ गुरुनमस्कारा ॥
गुरुमूलनमस्कारः ॥ ॥ अर्घ्यपात्रपूर

जातमपूजान्तं विधाय ॥ ॥ ततो देवपूजामाल
मेत ॥ ॐ अस्य पाशुपतये मन्त्रस्य ॥ वामदेवत्र
भिः ॥ पत्ति छन्दः ॥ श्रीपशुपतिदेवता ॥ सर्वार्थ
कामनार्थं विनियोगः ॥ ॥ ॐ कुंफट् अस्वा
यफट् ॥ ॥ ॐ कुंफट् अगुष्ठाभ्यां ॥ श्रीकुंफट्
ऊनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ पेंडुं फट् मध्यमाभ्यां ॐ ॥ ॐ
शुं कुंफट् उपनामिकाभ्यां वषट् ॥ ॐ कुं कुं फट् के

निष्ठाभ्यां वैषट् ॥ ॐ फट् ॐ फट् करतरपृष्ठा
भ्यां मर्याय फट् ॥ एवं हृदयादि ॥ आसनपू
जा ॥ ॐ आराधादि ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥
॥ ॐ वृषासनाय ॥ ॐ नमो भगवते सकलगु
ह्यत्मने शक्तियुक्ता अनन्तयोगपीठान्तरे ॥
॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ षट् चक्रं दशभुजं च पशुपद्मास
ने स्थितं ॥ अग्निज्वाला निमंश्मश्रुर्दुर्जं

भीमदृष्टकं ॥ खड्गवानो अक्षस्त्रं शक्तिपरशुमेव
च ॥ दधानं दायकं रोहते रुद्रादि क्रमतो गुरुं ॥ कि
ट्कादौ कुक्षिकाच निमूलं वक्त्रं दधुयूक् ॥ वा
महर्षे च विभ्राणं मध्याह्नं कसमद्युतिं ॥ नानाभ
रदी प्रागं पन्नगेन्द्रेण लंकृतं ॥ स्फुरति कोशानि
मंचान्तं सर्वरक्षावरं स्मरेत् ॥ ॐ ध्यानपुष्पं नमः
॥ ॥ आवाहनादि ॥ पाद्याद्युपचारः पूजः दी

पंनैवेद्यान्तनिवेदयेत् ॥ महाप्राशुपतमं
त्रेनत्रयांजलिते ॥ वलिमूद्रा ॥ ततोमातृकापू
जा ॥ ॐ आभरत्रयादिभ्यो ॥ ॐ सिंह
सनाय ॥ आवाहनादि ॥ त्रयांजलि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
ॐ उमायै ॥ मूद्रा ॥ ॥ ततोपरिवारपूजा ॥ अष्ट
मूर्तिपूजा ॥ सर्वायक्षिनिमूर्तये ॥ भवायजल
मूर्तये ॥ रुद्रायानिमूर्तये ॥ उग्रायवायुमूर्त

ये ॥ भीमायज्वाकाशमूर्तये ॥ पशुपतयेयजमा
नमूर्तये ॥ महादेवायसोममूर्तये ॥ ईशानाय
सूर्यमूर्तये ॥ ॥ ततोवक्त्रपूजा ॥ ॐ क्षं दुर्ध्रुवत्राय
नमः ॥ ॐ यं पूर्ववक्त्राय ॥ ॐ रं दक्षिनवक्त्राय ॥
ॐ वं उत्तरवक्त्राय ॥ ॐ संपश्चिमवक्त्राय ॥ ॐ हं
प्रध्ववक्त्राय ॥ ॐ नन्दिने ॥ ॐ भृंगिने ॥ महा
कालाय ॥ अघोरमंत्रेनत्रयांजलि ॥ मूद्रा ॥ ॥
शक्रवेद्वारचनं ॥ ॐ तत्त्वायामि ॥ विशेषवेद ॥ ॥

ॐ सद्योजाता ॥ ॐ वाममद्या ॥ ॐ आनेरुद्रा ॥ ॐ यत्पूरु
षं व्यदा ॥ ॐ तमीशानं ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ अम्बे
अचिके ॥ ॐ विश्वतश्चा ॥ ॐ चतुस्वरिणि ॥ जप ॥ म
गलसोत्रा ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो रुद्राय सांता
यसान्ताय वृक्षने परमात्मने ॥ कपदिने महेशाय
नलाय महते नमः ॥ त्वं हि विश्वसृजांश्च पिता त्वं
प्रपितामह ॥ नमो रुद्राय महते नीलकण्ठाय वैधसे ॥
विश्वाय विश्वबीजाय जगदानन्दहेतवे ॥ ॐ कार

स्त्वं वषट्कारः सर्वारंभप्रवर्तकः ॥ यज्ञोसियज्ञ
कर्मासियज्ञात्तं च प्रवर्तकः ॥ रक्षरक्ष महादेव
पशूनां पतये नमः ॥ नमामि देवं वरदं वलेन्यं
नमामि शंभुं प्रवरं सनातनं ॥ नमामि देवेश्वर
मीश्वरं हरं नमामि शङ्खभुजगदेकवर्धुं ॥ य
स्याज्ञया जगदृष्ट्या विरिं विपालकोरुरिः ॥
संहर्ता कालरुद्राक्षो नमस्तस्मै पिता किने ॥ क्ष

मास्तुति॥ देवाशीवादात्मशीर्वादं॥ ॥ स्वा
नकोकायमतेव॥ न्यासाचम्य॥ इति पशुपति
पूजा॥ ॥ ततो कीर्तिमूर्खपूजयेत्तथा
॥ जलस्त्रोधनाचम्य॥ सूर्यार्घ्यं॥ अथादि॥ वा
क्क॥ गुरुपूजा॥ ततो गनगुरुमूलनमस्कार॥
प्राणायामऋष्यादिवतीशिन्यासः॥ अथार्घ्य
पात्रपूजान्मपूजनान्तं विधाय॥ ॥ द्वारपू

जा॥ ॐ ह्रीं द्वारदेवतादिभ्यो॥ ततो मोहनीसाधनं य
थाविधानेन॥ ॥ संधूपयित्वा मालिनीपटेन॥ ॥ अथ
पंचवलिदानं॥ ॐ वां वदुकनाभाय वलिंगं ह्रस्वा
हा॥ एवं क्षत्रयोगिनी चामुरागः गणेश॥ जप॥ १
स्तोत्रं॥ ॐ गौर्यापुत्रं कुमारंगगरातनुधृतं क्षत्र
पंयोगिनी च चामुरागचरणरूपादुरितमयह
रं विघ्नहारंगणेश॥ पुष्पाद्या धूपदीपामिषवलि
मधुमिरर्चिता भूषिता गंवक्त्रे शं पूजकानां विज

यत्तु अयत्तु भुक्तिमुक्तिचदात्तु ॥ अत्र गंधादि ॥ अथः
स्वनिम्नपूजा वलिदानं नकारयेत् ॥ ॥ ततः किर्ति
मुखपूजा ॥ न्यासः ॥ ॐ पद्मासनाय ॥ ध्यानं ॥ आ
वाहनादि ॥ त्रयं जलि ॥ वलिमुद्रा ॥ परिवारपू
जा ॥ ॐ हेतुकभैरवाय ॥ एवं हेतुक ॥ त्रिपुरान्त
क ॥ अग्निवेताल ॥ काराक्ष ॥ कपालीश ॥ स्क
पाद ॥ भीमरूप ॥ हातक ॥ अचरा मेघभासुर ॥

वलिमुद्रा ॥ षडंग ॥ ॥ ततः शिखास्वच्छपूजा ॥
ॐ कूं हृदयादि षडंगन्यासः ॥ ॐ आराधादि ॥
ॐ के मन्नासनाय ॥ ॐ दृष्टासनाय ॥ ध्यानं ॥
ॐ शुद्धस्फटिकशंकाशंपंचवक्त्रत्रिलोचनं ॥
पिङ्गभ्रुपिङ्गकेशश्चरुफेटकधारणं ॥ ३
महं विद्याङ्गहस्तं च वित्तुकोपालधारिणं ॥
प्रेताहं महादेहं व्यायेः हंक्षत्रपालकं ॥ आ
वाहनादि ॥ त्रयं जलि ॥ वलिमुद्रा ॥ षडंग ॥

ASHA ARCHIVES

3490

अथ ध्यात्रे पूजा ॥ न्यासः ॥ नरासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ नी
लजीमूतशंकाशं रुक्मवक्त्रं त्रिलोचनं ॥ पिंगमूर
पीङ्गकेशश्च खड्गपेडकंधारणं ॥ डमरुखट्वा
ङ्गहस्तश्च विन्दुकोपालरिणं ॥ प्रेताहं महादे
हं ध्यायेत् ॥ हंक्षत्रपालकं ॥ आवाहनादि ॥ त्रयोज
लि ॥ वलिमुद्रा ॥ षडंगेन पूजा ॥ ॥ ततो वदुक्
पूजा ॥ न्यासः ॥ ॐ मयूरासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ

महामयूरमाहं कुमालं रुद्रिणं ॥ रक्तमूलादिमूषा
गंडगशक्तिकरं धृतं ॥ विन्दुमुद्राकरश्चीमानूरक्ता
म्बरविभूषितं ॥ एवं च ध्यायते देवं वदुक् कंधारह
प्रिणं ॥ आवाहनादि ॥ त्रयोजलि ॥ वलिमुद्रा ॥
षडंगेन पूजा ॥ ॥ ततो गरुडपूजा ॥ न्यासः ॥
ॐ मूषासनाय ॥ ॐ गजवक्त्रं गरुडं च लम्बो
दरमहात्मनं ॥ आगच्छ भगवं देवं पीठजाग
वर्त्तते ॥ आवाहनादि ॥ त्रयोजलि ॥ वलिमुद्रा ॥

षडंगेन पूजा ॥ ॥ नमो मातृका गण पूजा ॥ ब्रह्मा
यनी ॥ न्यासः ॥ ॐ हंसासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ ब्रह्मा
णी नु चतुर्वक्त्रं पीतवर्णां चतुर्भुजां ॥ श्रुवाकं मण्ड
रुधरा त्वक्षमालां भयप्रदा ॥ शृंगाजीनां गभू
षी च हंसस्था सोमप्ररूपिणी ॥ ध्यानपुष्पं ॥ ३
यां जलि ॥ ॐ अँ आँ अशितौ ग अ १६ ब्रह्मराणी
शक्तिशहिताय ॥ वलिः मुद्रा ॥ ॥ माहेश्वरी

न्यासः ॥ ॐ हंसासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ माहेश्वरी त्रिव
क्त्रा च श्वेता त्रिनेत्रधारिणी ॥ घंटा डमरु शृङ्गा च भ
यावृषभासना ॥ ध्यानपुष्पं ॥ २ ॥ आवाहनादि ॥ ३ ॥
यां जलि ॥ ॐ ईँ ईरु रु भैरवाय कं पमौ हलक्ष्मी श
क्तिशहिताय पाप ॥ वलिः मुद्रा ॥ षडंगेन ॥ ॥ कौ
मारि पूजा ॥ न्यासः ॥ ॐ मयुराज्ञाताय ॥ ध्यानं ॥
ॐ कौमारी षडङ्गो चरत्तवर्णा चतुर्भुजा ॥ कुर्कु
दभयशक्तिश्वरदामयूरासनी ॥ आवाहना

दि॥ **त्रयोजलि**॥ ॐ उं उं उं चरभैरवायवं पकोमारी
शक्तिसहितायपापू॥ **वलिमुद्रा**॥ षडंगेन पूजा॥
वैष्णवी पूजा॥ न्यासः॥ ॐ गरुडासनाय २॥ ॐ
ध्यानं॥ ॐ वैष्णवीशपावर्णावशंचक्रधृताशुभा
गदाप्रदधरादेवीवनमालाविभूषिता॥ आवा
हनादि॥ **त्रयोजलि**॥ ॐ नैऋतौ क्रौञ्चभैरवाय
८५ वैष्णवीशक्तिसहितायपापू॥ **वलिमुद्रा**॥ ष

डंगेन पूजा॥ ॥ **वरारूप पूजा**॥ न्यासः॥ ॐ महिषास
नाय २॥ ध्यानं॥ ॐ वाराहीवैकवक्रातुकृष्णव
र्णाः शुभानना॥ शृकरास्यात्रिनेत्रावरवेताल
पात्रधारिणी॥ रवराउदराधरादेवीमहिषसूक्त
होज्वला॥ **आनपुष्पं** २॥ **आवाहनादि**॥ **त्रयोज**
लि॥ ॐ लं लं उन्मत्तभैरवायतंपवाराहिशक्तिश
हितायपापू॥ **वलिमुद्रा**॥ षडंगेन पूजनं॥ ॥ ॥

इन्द्रायणी पूजा ॥ ॐ गजासनाय ॥ ॐ इन्द्रानी वै
कवक्रातुहेमवर्णाकरिस्थिता ॥ सहस्राक्षवज्र
काशवित्तुत्रिनेत्रिका ॥ ध्यानपुष्पं ॥ आवाहनादि ॥
त्रयांजलि ॥ ॐ नृनैकपालीभैरवाययंपद
दायशिशक्तिशहितायपापू ॥ वलिमुद्रा ॥ ष
डंगेन पूजनं ॥ ॥ वामुरागपूजनं ॥ न्यासः ॥ ॐ प्रेता
सनाये ॥ ध्यानं ॥ ॐ वामुरागैकवक्रावगर्ताक्षि

रक्तवर्णिका ॥ क्षीनदेहानिहतास्यादंष्ट्रावैमुराग
धारिणी ॥ पाशाकर्तृकक्षलावप्रेतस्थावह्निनेत्र
का ॥ ध्यानपुष्पं ॥ आवाहनादि ॥ त्रयांजलि ॥
ॐ ओं ओं भीषनभैरवाययंपदवामुरागशक्ति
सहितायपापू ॥ वलिमुद्रा ॥ षडंगेन पूजनं ॥
महालक्ष्मीपूजा ॥ न्यासः ॥ ॐ सिंहसनाय ॥
ध्यानं ॥ ॐ महालक्ष्मीरेकवक्राध्वेतवर्णात्रि

नेत्रिका॥ कपालकर्तृकाश्च ~~न~~ कर्तृकाश्चिह्नवा
हिनी॥ ~~ध्यानपुष्पे~~॥ आवाहनादि॥ त्रयोजलि
॥ ॐ अं अः संहारभैरवाय यं प महालक्ष्मि
क्तिसहिताय पापू॥ वलि मूढा॥ पंडुगेन पूज
नं॥ ॥ ~~घारदेवपूजा~~॥ ॐ पद्मासनाय ॥ ॐ
घारदेवताय ॥ वलि मूढा॥ ॐ घारदेवै ॥
मोहनीसगुणपूजा॥ वलि मूढा॥ ॥ ततो वर

लियानं यथा॥ ॐ वांवदुकनाथाय वलिगृह
कुपद् २००॥ ॐ क्षांक्षत्रपालाय वलिगृह २ कुंफद् ००॥ ॐ
यां सर्वयोगिनीभ्यो वलिगृह २ कुंफद् ००॥ ॐ वां वा
सुरायाय वलिगृह २ कुंफद् ००॥ ॐ गांगरापतये व
लिगृह २ सर्वविघ्नान्नाशाय २ कुंफद् ००॥ ॐ
वं हेतुकभैरवा॥ असितांग॥ वल्लभ्यादि॥ की
र्तिमुख॥ शीखास्वच्छन्द॥ कर्नवीराय छरम

॥ सर्वेभ्यो ॥ ॐ स्वस्थानक्षत्रपालश्चवद्वको
वैद्यराजकः ॥ बालग्रहयुवापिबृहच्चैवाउपग्र
हः ॥ रमसानाष्टशुचिष्ठानवातिनोहहिसंकरः
॥ भैरवगणमात्रादिविदिग्वासिनीगराः ॥ ते
सर्वेनतप्यन्तुअत्रैववलिकर्मनी ॥ वलिगृहूर
कुंफरू ०० ॥ ॐ समस्तमन्त्रपीठेति ॥ ॐ उक्तानुक्त
ति ॥ ॥ इति वलि ॥ ॥ चन्दनादिनानोपचारनिवेद

येन्यूपदीपनैवेशान्त्रं ॥ ॥ तर्पणाचमनश्च ॥ प्रति
ष्ठा ॥ ॐ आवज्ञवेति ॥ दुतयेदतसाथन ॥ दक्षिणा
तयके ॥ ॥ ततोखदपूजा ॥ अखिनखदंप्रख्या
त्य ॥ चन्दनादिपूजा ॥ त्रयांजलि ३ ॥ ॐ ह्रीं कालि
रवजेश्वरीलोहदरायनमः ॥ ऐं वागेश्वर्यै
॥ लक्ष्मीनारायनाभ्यां ॥ उमा महेश्वराय ॥ ज
पहुं ॥ स्तोत्र ॥ ॐ खजायखलुनासायत्राजि का

र्यायतत्परः॥ पशुसंस्कारः॥ वक्त्रः॥ अश्ववराहः॥ अ
मुकगोत्रयजमानस्य अमुकदाससजनस्य य
थासास्तोत्रफलप्राप्तिकामनयाः प्रतिवार्षि
कयथात्राक्त्युपचारेण कर्मनीश्रीस्वेष्टदेव
यस्त्वशक्तिसहितायै सांगाय सपरिवाराय
सबोहनाय मातृकागणसहिताय सभैरवा

यश्च संछागं वहिदैवतंतुभ्यमहमुत्तमजेत्॥ पशुप्रार्थ
ना॥ ॐ पशुंगृहातिदेवैश्च प्रजाया वोपयायते॥ अ
स्यापि स्वर्गसंप्राप्तिः भैरवाय प्रयच्छतु॥ जन्मना
कर्मसिरसि निधाय॥ मूहयके॥ ॐ आ ॐ फ ॥ ००॥
बंधेनुमुद्रा॥ मृगनिवेदयेत्॥ पशुसिरसि वलिप्रज्वा
ल्य॥ ॐ अन्नं बल्यं सितं प्राचस्व सितिकुलाग्निदेव
ता॥ वन्दिता सर्वभूतेभ्यः श्योतिरूपं नमो रक्तते॥ ॥
दुतयथनेदु॥ ॥ सकलशोभे देवजोपयके॥ दक्षि

रातया॥स्तोत्रं॥ॐ अखरोति॥ॐ क्षत्रेश्वरकुं
शं च गणेशं विष्णुं हारकं॥संपूज्य विधिवद्ब्रह्म
मासि श्रीविदेवकं॥ॐ रुक्मसुखाय देवाय भैर
वाय महात्मने॥शिवभक्ताय भीमाय किर्तिमुख
नमो रक्तते॥ॐ पंचांगं पंचवक्त्रं विक्रान्तिजुगध्वज
पुंड्रं शंकां कतां पाशहरां त्वभयकरवरं सर्वसत्त्व
स्वरूपं॥वैजाख्यं शुभं लंडं मरुजं पधरं विन्दुपा
त्रं त्रिनेत्रं कीडं शक्तिमध्यं सगरापरिवृतं पातुः

कीर्तिवासः॥ॐ असितांगोरुश्च शुक्रो धरुस्सन्नभैर
वः॥अपाक्षी प्रभिरवनश्चैव संहारश्चैव वायुधा॥ॐ
ब्रह्माक्षी महेश्वरि चैव कोमारी वैष्णवी तथा॥वाराहश्चै
व इन्द्राक्षी चामुराक्षी लक्ष्मी मातृका॥माहा माया॥सं
वर्त्ता॥क्षमास्तुति॥अत्र गन्धादि॥॥ततो वृत्तमा
संनिवेदयेत्तत्तर्पणं च॥देवाक्षी वीर्या॥ॐ रुक्मा
ने के नि॥मोहनी सगुराविसर्जकारयित्वा देवता
निवेदयेत्॥॥आकलपूजा होय॥॥अथा

नेमोशीर्वादः॥ॐॐकारंवायुमिति॥ ॥चन्दनमि
न्दुरसगगुरामोहनीतीलकंकारयेत्॥ ॥मराउ
लस्थदेवस्यपुष्पशिरसिभूषणं॥नमः॥व
लिविसर्जनं॥ ॥आत्मासीनं॥ ॥चन्देश्वरी
पूजा॥इत्रानभागे॥ॐॐवैवराडिश्वराय॥
आनमनःसूर्यसादि॥पुष्पं॥ ॥ततो
॥मोअभिषेकं॥ॐॐकारोधृत्पादे

॥चन्दनं॥ॐॐवनलोपतमिति॥ ॥सिन्दूरं॥ॐ
सिन्दूरशिरः॥सगुरा॥ॐॐदध्यक्षतसमायुक्तं
रभावप्रदं सर्वमंगलदायित्वं सर्वसिद्धिकरं
भं॥मोहनी॥ॐॐमोहनं कामसंसिद्धिस्तथा आक
र्मनंतथा॥अंजनं च श्रीमायं मोहनं दद्यात्
॥आशीर्वादसर्वजनेभ्यो ददेत्॥जेष्वास्थिह
स्तेसिन्दूरमान्दददेत्॥ब्राह्मणपूजा॥दक्षिणा
मयभोजनं॥ ॥इतिअक्षरस्यदेगुलिपु

जाविधिसमाप्तम् ॥ ॥ सं ६९ ॥ वैत्रक
११ रो १ ध्वकुशु श्रीवागपसजानत्यचोयाजु
लशुभं ॥

किर्तिमुखस्य ध्यानं ॥ ॐ एकवक्त्रं त्रिनेत्रं च
महादेवस्य देहजः ॥ बुद्धिशीलं रूढं
नागकुलं भूषणं ॥ स्यामवर्णं घोररूपं
स्वदेहं च भक्षकः ॥ ध्यायेत्कीर्तिमुखं देवं

सर्वकामफलप्रदः ॥ ॥

रौद्ररूपं भजान् कपाक ॥